शिव आमंत्रण

RNI: RJHIN/ 2013/ 53539

RNI: RJHIN/ 2013/ 53539 | महाशिवरात्रि महापर्व के गुप्त रहस्यों को उजागर करता विशेषांक | फरवरी - 2016, पृष्ठ: 4, मूल्य: 6 रुपए

हर सांस में बाबा बसा है
- राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ ...पेज - 3

मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है...
...पेज - 2

लाखों लोगों ने अनुभव किया प्रभू का प्यार
...पेज - 2

हां, परमात्मा आए हैं धरा पर...
- निज़ार ज़ुमा, अध्यक्ष, 51 अंतरराष्ट्रीय कंपनीज, केन्या ...पेज - 3

'विश्व परिवर्तन' की 'अंतिम वेला'
...पेज - 4

मन से नित्य होता है परमात्मा से मिलन
- कविता मिश्रा, विशेष मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, आगरा ...पेज - 4

परमात्म मिलन का समय : वर्तमान समय के हालात और स्थिति विश्व परिवर्तन के प्रबल संकेत है, यही वह समय है जब परमात्मा अवतरित होकर नयी दुनिया बना रहे है।

करें, परमात्म मिलन की अनुभूति

परिवर्तन संसार का नियम है। सतयुग के बाद कलियुग, दिन के बाद रात्रि आना स्वाभाविक है। यह दोनों ही प्रक्रिया अपने समयानुसार चलती रहती हैं। इसी समयावधि में परमात्मा के आगमन और नई दुनिया की स्थापना का कार्य भी निहित है। वर्तमान समय बदलते परिवेश, गिरती मानवता, मूल्यों का पतन, प्राकृतिक आपदाएं, पर्यावरण बदलाव, हिंसक होती मानवीय चेतना, आतंकवाद सबकुछ बदलाव की ओर ही इशारा कर रही हैं। परंतु हम मनुष्यात्माओं को इस इशारे को समझना होगा। यह हमारा नहीं बल्कि परमात्मा का संदेश है अर्थात् पूरा विश्व बदलाव के मुहाने पर खड़ा है। परमात्मा गुप्त रूप में नई दुनिया अर्थात् आने वाले विश्व का सारथी हैं। ऐसे में परमात्मा की अनुभूति कर जीवन में मानवीय मूल्यों को धारण कर नयी दुनिया की स्थापना में भागीदार बनें।

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

वर्तमान समय हम एक नए और सुख-सुविधा संपन्न युग में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सबकुछ आज इंसान के हाथों में होता जा रहा है। देखने को तो बहुत सी चीजें खोज ली गई हैं, लेकिन हमारे अंदर का अमन-चैन कहीं खो गया है। वो अंतर्मन का प्यार, विश्वास और शांति हमें चाहकर भी नहीं मिल रही है। आज चाह तो हर एक मनुष्य मात्र की है कि हमें दो पल की शांति अनुभूति हो जाए, लेकिन अफसोस, सबकुछ करते हुए भी और विकास की पटरी पर दौड़ते हुए भी अंदर से खोखले होते जा रहे हैं।

आज जिस शांति की चाह है जिसके लिए हमने दौड़ लगाई है मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे की, लेकिन फिर भी खाली रहे। क्योंकि हमारी विधि ठीक नहीं थी। हम भूल गए अपने उस शांति के सागर शिव पिता परमात्मा को, जिससे हमें अखुट सुख-शांति की प्राप्ति होती है। जिन मूल्यों को आज हम भूल चुके हैं वो परमात्मा के सच्चे ज्ञान से ही फिर से जीवन में आएंगे। अगर उस पिता परमात्मा को जानेंगे ही नहीं, तो कैसे हमें शांति की प्राप्ति होगी। कैसे हमारी जीवन नैय्या पार लगेगी। कौन करेगा इस सृष्टि का पुनर्उत्थान। जिस देश से हम आत्माएं इस धरा पर पार्ट बजाने आई थीं वहां वापस कौन लेकर जाएगा। इन सब बातों के लिए परमात्मा को जानना बहुत जरूरी है।

आखिर शिव परमात्मा कौन हैं

भारत देश में 33 करोड़ देवी-देवताओं की महिमा गाई हुई है। परंतु इन सभी देवों के भी रचनाकार स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। जिनकी अनेक धर्मों, अनेक रूपों में भले ही पूजा की जाती हैं, लेकिन उसका केंद्रबिंदु परमात्मा शिव के पास ही जाकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं।

वे ब्रह्मा द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा इस आसुरी, तमोगुणी और विकारी सृष्टि का विनाश कराते हैं। परमात्मा तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। वे ही विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता हैं। परमात्मा अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता हैं। ज्ञान, आनंद, प्रेम, सुख, पवित्रता के सागर हैं। शांति के दाता हैं। उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है।

परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। वह प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर इस सृष्टि चक्र का सच्चा ज्ञान दे रहे हैं। परमात्मा के बताए अनुसार वर्तमान समय कलियुग के अंत के भी अंत का समय है और जल्द ही इस धरा पर नई दुनिया आने वाली है। अतः शिव से योग लगाकर अपना राज्य भाग्य लें।

परमात्मा के साथ आत्मा का सम्बन्ध

पूरे विश्व जगत में हर एक का कहीं ना कहीं एक दूसरे से कोई ना कोई रिश्ता है जो एक दूसरे को जोड़ता है। जैसे शरीर का पिता शरीरधारी होता है। वैसे ही परमात्मा और आत्मा का सम्बन्ध पिता और पुत्र का है। अर्थात परमात्मा ने ही हम सभी सर्व आत्माओं की रचना की है। इसलिए सभी धर्मों के लोग निर्विवाद रूप से एक परमात्मा को याद करते हुए कहते है कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में भाई-भाई। मतलब साफ है कि यदि शरीरों के आधार पर विवेचना होती तो सबके माता पिता अलग-अलग होंगे परन्तु आत्मिक रूप की व्याख्या में सभी आत्माओं का पिता परमात्मा ही है। इसलिए हम सभी आत्माओं का परमात्मा के साथ गहरा सम्बन्ध है। यही वजह है कि जब भौतिक दुनिया में इंसान चारो ओर से दुखी और अशांत हो जाता है तब वह सच्चे दिल से परमात्मा को याद करता है जो उसे सही मार्ग प्रशस्त कर सके। क्योंकि परमात्मा ही दुनिया में एक ऐसा है जो सभी मनुष्यात्माओं को सही दिशा दे सकते है और निःस्वार्थ प्रेम करता है। इसलिए परमात्मा अब अपने बच्चों को दुखों से छुड़ाने, सुख देने तथा बुराईयों से मुक्त करने आया है। जिसे हमें पिता और पुत्र के रूप में याद करने की जरूरत है।

ईश्वर जो पढ़ाता है उसे बच्चे की तरह पढ़ती हूं

मैंने जब से होश संभाला उस वक्त से ही परमात्मा ने मुझे संभालना प्रारंभ कर दिया। पहले ब्रहा बाबा के सामने जो भी आता था साक्षात्कार होने लगता। मेरी जिंदगी परमात्मा के हाथों में हैं। जैसे चलाता है वैसे ही मैं चलती हूं। ईश्वर ने जो पढ़ाया और जो पढ़ा रहा है उसे एक बच्चे की तरह पढ़ती हूं। शिवबाबा को इस दुनिया में आए 80 वर्ष हो गए हैं। बाबा बच्चों में ऐसे संस्कार भरते हैं कि एक साधारण मनुष्य श्रेष्ठ बने।

राजयोगिनी दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू, राजस्थान

यहां की शिक्षा से लोगों का जीवन बदला है

देश का निर्माण करने के लिए प्रतिभाओं का विकास करने की जरूरत है। यदि हम एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं तो हमें अच्छे शिक्षक बनाने होंगे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था नैतिक मूल्यों को लेकर अच्छा कार्य कर रही है। यहां की शिक्षा से कई लोगों का जीवन बदला है। मेरी शुभकामना है यह अपने लक्ष्य में सफल हो।

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

हर पांच हजार वर्ष बाद होती है इस सृष्टि की पुनरावृत्ति

परमधाम निवासी हैं परमात्मा

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

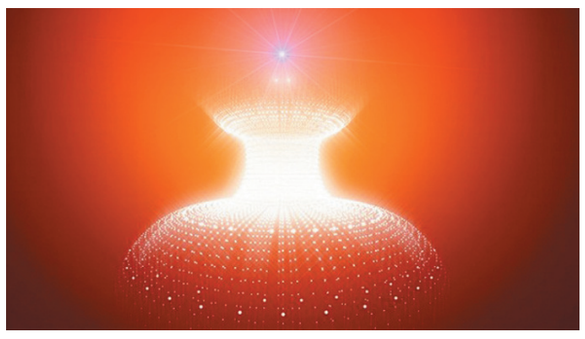

पूरा ब्रह्माण्ड तीन लोकों से मिलकर बना है। पहला मनुष्य सृष्टि या स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी पांच तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं, क्योंकि यहां मनुष्य कर्म करता है। इस लोक में ही जन्म-मरण है। इस सृष्टि को विराट नाटकशाला या लीलाधाम भी कहा जाता है। इसमें संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र है। स्थापना, विनाश और पालना आदि परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना पार्ट बजाने आती हैं।

सूक्ष्मलोक: सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। इसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं, क्योंकि इनके शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। दुख, सुख का नाम निशान नहीं होता।

ब्रह्मलोक या परमधाम

सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ज्योति ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। गीता के 15वें अध्याय के छठें श्लोक में लिखा है ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी मनुष्यात्माएं अपने असली रूप में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। यहां न संकल्प है, न कर्म है अतः न सुख है, न दुःख है, बल्कि एक न्यारी अवस्था है।

परमात्मा जानते सभी की जन्मपत्री

आत्मिक स्वरूप से देखा जाए तो परमात्मा से हम सर्व संबंध प्रस्थापित कर सकते हैं। दैहिक स्वरूप से कोई भी संबंध रखेंगे तो उसमे आज नहीं तो कल विकार प्रवेश करने लगेंगे। लेकिन परमात्मा का एक संबंध ऐसा है उसमें विकार नहीं आ सकता। आप सुरक्षित रह सकते हैं। परमात्मा सबकी जन्मपत्री और कर्मपत्री को जानते हैं। आत्मिक बाप होने के नाते वह संगमयुग पर आत्माओं को भरपूर करने आया है। लेकिन इसके लिए उनके साथ सच्चाई, प्यार, वफादारी, ईमानदारी के साथ रहना जरूरी है। शिव अर्थात् कल्याणकारी, मंगलकारी, शुभकारी, पापनाशक, मुक्तिदाता, दुःखहर्ता, सुखकर्ता। सदा सुखदायी, सदा मंगलकारी कौन नहीं बनना चाहता? परमात्मा शिव हजारों सूर्यों से तेजोमय है। स्थूल नेत्रों से उन्हें देखा नहीं जा सकता है। परमात्मा की तो अनुभूति की जा सकती है।

बड़ा सवाल ?

शिव की रात्रि, देवताओं के जन्मदिन...क्यों

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

ये बड़ा सवाल है कि विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? वास्तव में इसका अर्थ है परमात्मा शिव जन्ममरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता है।

शिव की जयंती कर्तव्यवाचक

कल्याणकारी विश्व पिता शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञा वाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण विषय- विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदें अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं और पुनः सतधर्म की स्थापना, सच्चा गीता ज्ञान एवं मनुष्यात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों

हम देखते हैं कि शिवलिंग पर सदा तीन रेखाएं अंकित की जाती हैं। इसके बीच में एक आंख भी दिखाई जाती है। इसके अलावा हमेशा तीन पत्तों वाला बेलपत्र चढ़ाया जाता है। इसके पीछे वास्तविकता यह है कि शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों वाला बेलपत्र परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक है। उन्हें करन-करावनहार कहा जाता है। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। जब परमात्मा का अवतरण होता है तो इसके साथ ही इन तीन देवताओं का कार्य भी सूक्ष्मलोक में आरंभ हो जाता है।

यह सच है ईश्वर नई दुनिया बना रहे हैं

यह सच है कि ईश्वर नई दुनिया बना रहे हैं और इसकी शुरुआत ब्रह्माकुमारी संस्था के माध्यम से की जा रही है। यहां दिया जा रहा आत्मा-परमात्मा का ज्ञान स्पष्ट, तार्किक और वैज्ञानिक रीति से परिपूर्ण है। निश्चित ही नियमित राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से आत्मा की आंतिरक शक्तियों का विकास होता है। मन को परमात्मा में लगाकर हम उनसे मंगल मिलन मना सकते हैं।

द्रोपदी मुरमू, राज्यपाल, झारखंड

ईश्वरीय सत्य

परमात्मा एक है और सत्य है, उनके ध्यान से ही आत्मा बनती शक्तिशाली

पांच विशेषताओं से करें ईश्वर की पहचान

परमात्मा को जानने के लिए कुछ बातों का जानना जरूरी है। परमात्मा एक है और सत्य है। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा का परिचय भी केवल एक ही हो सकता है। ईश्वर की सत्य पहचान क्या होगी? जिस प्रकार किसी डॉक्टर की पहचान उसके ज्ञान, अनुभव, गुणों तथा कर्तव्यों के आधार पर ही की जा सकती है, उसी प्रकार परमात्मा का सही स्वरूप भी पांच बातों के आधार पर पहचाना जा सकता है-

परमात्मा ही परमशिक्षक, परम सतगुरु और परम रक्षक हैं

जो सर्वमान्य हो

परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वमान्य हो, यानी जिसे सभी धर्मों की आत्माएं स्वीकार करें, क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं का परमपिता है। उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि परंतु वह है तो एक ही।

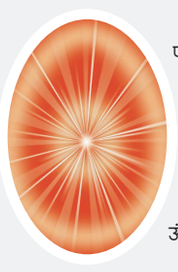

जो सर्वोच्च हो

परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम या परम हो। यानी उसके ऊपर कोई हस्ती न हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक, परम सतगुरु और परम रक्षक हैं। इसलिए उसकी महिमा में गाया जाता है - ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धाम, ऊंचा तेरा हर काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान। तो जिसका नाम, धाम, गुण और कर्तव्य सबसे ऊंचा है वही परमात्मा है।

जो सबसे न्यारा हो

परमात्मा उसे कहेंगे जो सबसे न्यारा हो। परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य, सुख-दुःख के चक्करों में नहीं आते हैं। परमात्मा इस प्रकृति की परिवर्तन-क्रिया अर्थात् सतो-रजो-तमो से भी न्यारा है। वह सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त है। इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का प्यारा माना गया है। ईश्वर से ऊंचा तो कोई है ही नहीं।

जो सर्वज्ञ हो

परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो अर्थात् वह सबकुछ जानता हो। किसी भी संदर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में नहीं आती है तो ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, भगवान जाने या अल्लाह जाने अर्थात् परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्वज्ञ है।

गुणों का भंडार हो

परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भण्डार हो। परमात्मा कभी भी किसी से लेता नहीं है, परंतु सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को देता ही रहता है। उसी के लिए गाया गया है, देने वाला जब भी देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।

अति धर्म की ग्लानि का समय ?

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत् अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।

यह महावाक्य सर्वआत्माओं के पिता परमपिता परमात्मा के है जब वे इस धरती पर आकर अपना दिव्य और महान कार्य करते हैं उसी दौरान ऐसी घोषणा करते हैं। इस दुनिया का श्रेष्ठ निर्माण स्वयं परमात्मा करते हैं, परन्तु जब मनुष्य अपने कर्मों में निम्न स्तर पर पहुंच जाता है मनुष्य के रूप में होते हुए भी उसके हाव, भाव, कर्म, सोच सब कुछ मनुष्यता के विपरीत हो जाते हैं दुनिया में सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी वे ऐसे कर्मों को अंजाम देते हैं जिसे सिर्फ असुर ही करते हैं। ऐसा शास्त्रों, पुराणों और वेदों में भी वर्णित है।

ऐसे कार्यों का शास्त्रों में भी नहीं हैं उल्लेख

सवाल धर्म की ग्लानि का लें तो अभी तक शास्त्रों में भी जो धर्मग्लानि की बात कही गई है, आज के लोगों के कर्म उससे भी निम्नस्तर के हो चुके हैं मनुष्य ऐसे घृणित काम कर रहा है, जिसके बारे में ना तो कभी शास्त्रों में लिखा गया है और ना ही आज के पहले किसी ने सोचा होगा। आज देश और दुनिया में भक्ति का रूप और तादाद दोनों ही बड़ी तीव्रता से बढ़ी हैं, परन्तु उसमें तमोप्रधानता आ गई है।

मनुष्य पापों से इतना बोझिल हो गया है कि वह मंदिर व मस्जिद में भी केवल स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही जाता है। मुझे धन दे दो, मुझे पुत्र दे दो, कोई बच्चा दे दो, तो कोई-कोई अपने दुश्मन को ही समाप्त करने का वरदान और मन्नतें मांगने लगता है। उन लोगों की संख्या बहुत ही कम है जो अपने लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति का आशीर्वाद मांगते हैं।

आज संबंधों में इतनी गिरावट आ गई है कि जिसके बारे में कभी सोचा ही नहीं जा सकता है। बाप-बेटी, पिता-पुत्र, भाई-बहन, माँ-बेटे के संबंधों में भी निम्न स्तर की घटनाएं आए दिन सुनने और देखने को मिल जाती है।

मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है

गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में लिखा है - 'मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते'

गीता हो, शिवपुराण हो, महाभारत हो या यजुर्वेद हो सभी धर्म ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात स्पष्ट लिखी हुई है। शिवपुराण में लिखा है मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट होऊंगा। महाभारत में परमात्मा की व्याख्या एक अण्डाकार ज्योति के रूप में की गई है। वहीं गीता में दिव्य जन्म के बारे में लिखा है, तो मनुस्मृति में परमात्मा की व्याख्या हजारों सूर्यों से तेजस्वी रूप में की गई है।

गीता में परमात्मा के बारे में स्पष्ट लिखा है कि 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं प्रकृति को वश में करके इस लोक में धर्म की स्थापना करने और प्राय: लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं।' परमात्मा शिव ने पहले यह ज्ञान ब्रह्मा को दिया। ब्रह्मा को ही आदिदेव और शिव को स्वयंभू या आदिनाथ कहा गया है।

आदि शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय यह ज्ञान दिया था और योग सिखाया था। इससे स्पष्ट होता है परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा ही यह ज्ञान दिया।

अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुशी तनुमाश्रितम,
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।

परमात्मा ने गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले लोग मुझे पहचान नहीं सकते।

ब्रह्मा के ललाट से प्रकट हुए शिव : शिवपुराण

शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वे अध्याय में लिखा है 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट होऊंगा' अर्थात् समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ।

परमात्मा शिव ने ही ब्रह्मा मुख द्वारा नई सृष्टि रची। जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, तब शिव ने ब्रह्मा काया में प्रवेश किया। ब्रह्मा को पुनर्जीवित कर उनके मुख द्वारा नई सृष्टि रचने का कार्य आरंभ किया। शिव पुराण में यह उल्लेख अनेक बार आया है। साथ ही स्पष्ट लिखा है कि सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिह्न शिवलिंग ही है।

सृष्टि के विनाशकाल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंगम प्रगट हुआ जो न घटता था, न बढ़ता था। वह अनुपम, अव्यक्त था। उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ, अर्थात् परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दु:ख से भरे तमोगुणी वातावरण को परिवर्तन किया। यही वजह है कि शास्त्रों में ब्राह्मणों को ब्रह्ममुख वंशावली कहा गया।

ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश कर रची नई सृष्टि : महाभारत

महाभारत के शांतिपर्व श्लोक संख्या 337-24-25 में लिखा है कि 'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'। साथ ही लिखा है सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग के स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया और इस सृष्टि का कल्याण किया। इसका भाव यही है जब इस सृष्टि पर विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार), बुराइयों, पाप और धर्मग्लानि की अति हो जाती है तो परमात्मा ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। महाभारत में परमात्मा के अवतरण के बारे में लिखे अनुसार वर्तमान में सभी स्थितियां अनुकूल हैं।

झलकता है पवित्रता, शांति और सद्भाव

ब्रह्माकुमारीज संस्था के प्रत्येक भाई-बहनों के चेहरे और चलन से पवित्रता, शांति और सद्भाव झलकता है। सत्युग की यहां स्थापना हो रही है। बाकी सब लोग केवल अपने-अपने तरीके से बातें करतें है, परन्तु यहां की कार्यपद्धति जिस तरह से परमात्मा के निर्देशन में हो रही है, वह अपने आप में अद्भुत है। परमात्मा के अवतरण की बेहद सुखद अनुभूति है, जो बयां नहीं की जा सकती। बाबा आकर दादी के माध्यम से ज्ञान और दिशा देते हैं यह महसूस होता है। परमात्मा से जुड़ने का मुझे महान अवसर मिला है, हमारा भी भाग्य जमा हो जाएगा। परन्तु उसके लिए विश्वास के साथ जुड़ने की जरूरत है। इससे ही विश्व का भला होगा और एक दिन जरूर निराशा के बादल हट जाएंगे।

- **स्वामी चक्रपाणि,** अध्यक्ष, हिन्दू महासभा, दिल्ली

ज्योति ने की सृष्टि की स्थापना : यजुर्वेद

यजुर्वेद के 33/2 श्लोक
सवनिमेषा जज्ञिरे विद्यतु: पुरुषादधि। नैनमूर्ध्वम न तिर्यच न मध्ये परिजाग्रभात्।।

में लिखा है सृष्टि रचने के लिए ज्योतिर्लिंगम प्रगट हुआ। मनुस्मृति में लिखा है सृष्टि के आरंभ में एक ज्योति अण्ड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। तंत्रलोक में लिंग शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है - ल से लय अर्थात् विनाश और ग से गमन अर्थात् नई रचना का बोध होता है। शिव ये दोनों कार्य कराने वाले हैं, इसलिए उन्हें ज्योतिर्लिंगम कहा गया है। उनका स्मरणचिह्न मण्डलाकार है। सौर पुराण में भी लिखा है मण्डलाकार शिवलिंग के रूप में परमात्मा को स्मरण करें। शिवोपनिष्द में लिखा है शिवलिंग का निम्नभाग, मध्यभाग और ऊपर का भाग क्रमश: ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का प्रतीक है। इन सब बातों से परमात्मा के अवतरण की बात स्पष्ट हो जाती है।

इस ज्ञान से ही मनुष्य बदलेगा

इस पवित्र स्थल के जो ज्ञान का प्रचार- प्रसार हो रहा है, इससे ही पूरे विश्व में शांति हो सकती है। इस ज्ञान से ही मनुष्य बदलेगा। यह परमात्मा का कार्य है।

- **रामदिनेशाचार्य महाराज,** हरिधामपीठ गोपाल मंदिर, अयोध्या

यहां सिर्फ अमन, चैन और सुकून है

यहां सिर्फ अमन, चैन और सुकून है। यहां का एहसास अद्भुत है। संस्था लोगों को जोड़ने का कार्य कर रही है। जब हम भाई-बहन बनकर रहेंगे तो पूरे विश्व में जन्नत होगी। अपने आप को जानने से परमात्मा मिलेंगे।

- **सदाकत हुसैन,** मौलाना सथैली, इमाम, फरुखाबाद

देश को आध्यात्मिक ज्ञान व योग की जरूरत

समाज में संस्कारों का पतन हो रहा है। आज चिंतन करने की आवयश्कता है। हमारे देश को विश्व गुरु और सोने की चिड़िया बनाने के लिए इस आध्यात्मिक ज्ञान और योग की जरूरत है।

- **श्री 1008 स्वामी शिवस्वरूपानंद,** जोधपुर

परमात्मा को जोड़ने वाली विद्या ही राजयोग

यहां के पवित्र वातावरण में आत्मा और परमात्मा को जोड़ने वाली विद्या को ही राजयोग कहते हैं। यही सनातन सत्य है शाश्वत है। सभी धर्मावलंबियों को इसे जानने का प्रयास करना चाहिए।

- **स्वामी विवेकमुनि,** संचालक, विश्व अहिंसा संघ, दिल्ली

...और आध्यात्मिकता का प्रवाह चल पड़ता था

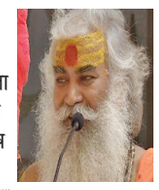

मैं तो साकार ब्रह्मा बाबा से मिला हूं। जब उनके पास बैठता था तो जैसे शरीर में गुलाब की खुशबू और पूरे शरीर में एक आध्यात्मिकता का प्रवाह चल पड़ता था। आज उनकी तपस्या का फल पूरे विश्व के सामने है। परमात्मा शिव सारथी हैं।

- **केसवानन्द सरस्वती महाराज,** सीतापुर

कलियुग के अंत और सतयुग के आदि पर आते हैं शिव भगवान

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

भगवान आने के बाद सब अपने आप ठीक हो जाएगा। यही भक्तों की भावना रहती है, लेकिन सत्य इससे अलग है। भगवान, शिव या हमारे आत्मा के पिता, ब्रह्मा तन के आधार से धरती पर अवतरित होते हैं। कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय पर वह अवतरित होते हैं।

पहले वह आत्मा, परमात्मा और इस सृष्टी नाटक के बारे में ज्ञान देते हैं। इसे गीता ज्ञान के नाम से जाना जाता है। इस गीता ज्ञान से सबकी सब समस्याएं मिट जाती हैं। वास्तव में ज्ञानसागर परमात्मा शिव ने कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय में जो ज्ञान दिया था, वही वास्तव में अमृत था। परमात्मा तो ज्ञान के सागर हैं, उनके ज्ञान का सार मनुष्यों ने अपनी बुद्धि रूपी कुंभ में धारण किया और परमात्मा के साथ संगम मनाया और उनकी सब इच्छाएं पूरी हो गईं।

स्पष्ट है कि शिव का अवतरण काल ही संगम है। ज्ञानसागर शिव के ज्ञान का मनन ही सागर मंथन है, उससे प्राप्त ज्ञानामृत को धारण करने से ही सफलता मिलती है। संगमयुग पर मिले ज्ञान के स्नान करने से ही आत्मा पावन बनती है। दुनिया में विकारों की अति होती है और चारों ओर तमोप्रधान वातावरण रहता है उसी समय शिव इस धरती पर अवतरित होते हैं। गीता में भगवान के महावाक्य हैं यदि तुम मेरा ध्यान करोगे तो 'मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा, परमधाम ले चलूंगा और स्वर्ग का स्वराज्य दूंगा।'

एक नहीं हैं शिव और शंकर

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं।

शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर परमात्मा शिव की रचना है। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की कोई जरूरत नहीं। ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप है। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे।

परमात्मा निराकार है, ध्यान से आती शक्ति

परमात्मा निराकार है, उनसे ध्यान लगाने से हमारे अंदर शक्ति आती है, जिससे हम स्वत: ही बुराइयों से बच जाते हैं। यहां का संचालन बहुत अच्छा है। यह संस्था निरंतर उन्नति करती रहे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

संत कहन सिंह, अध्यक्ष, पैंतालीस गुरुद्वारा, गोनिआनामंडी

बिना ज्ञान के जीवन में परिवर्तन संभव नहीं

यह तो सत्य है कि बिना ज्ञान के जीवन में परिवर्तन नहीं हो सकता। परंतु कौन सा ज्ञान सत्य है, यहां आने के बाद स्पष्ट रूप से महसूस होता है। इससे ही बदलाव होगा। इसमें राजयोग बेहतरीन है। **जगदीश सिंह झिंडा,** प्रबंधक, प्रधान गुरुद्वारा, करनाल

ध्यान से आत्मा बनेगी शक्तिशाली

शरीर के लिए तो हम अन्न ग्रहण करते हैं। इसी तरह मन के लिए भजन और आत्मा के लिए ध्यान आवश्यक है। यदि हम ध्यान नहीं लगाएंगे तो आत्मा शक्तिशाली नहीं बनेगी। यहाँ परमात्मा का सच्चा ज्ञान मिल रहा है।

- **स्वामी समर्पणानंदगिरी महाराज,** उपाध्यक्ष, प्रज्ञामिशन, गुरुकुलमपुरी

स्वप्न में नहीं सोचा था भगवान मिलेंगे

स्वयं इस सृष्टि के रचनाकार परमपिता परमात्मा को पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था मुझे इस जन्म में भगवान मिल जाएंगे। परमात्मा की याद और साथ से प्रत्येक कार्य में सहज ही सफलता मिलती जाती है।

ब्रह्माकुमारी संतोष, जोनल इंचार्ज, महाराष्ट्र, आन्ध्रा, तेलांगना जोन, मुंबई

ईश्वरीय सत्य

विश्वभर में मिलते हैं परमात्मा की यादगार के चिह्न, सभी ने स्वीकारी एक ज्योति की सत्ता

किसी न किसी रूप में सभी धर्मों में ज्योति की आराधना

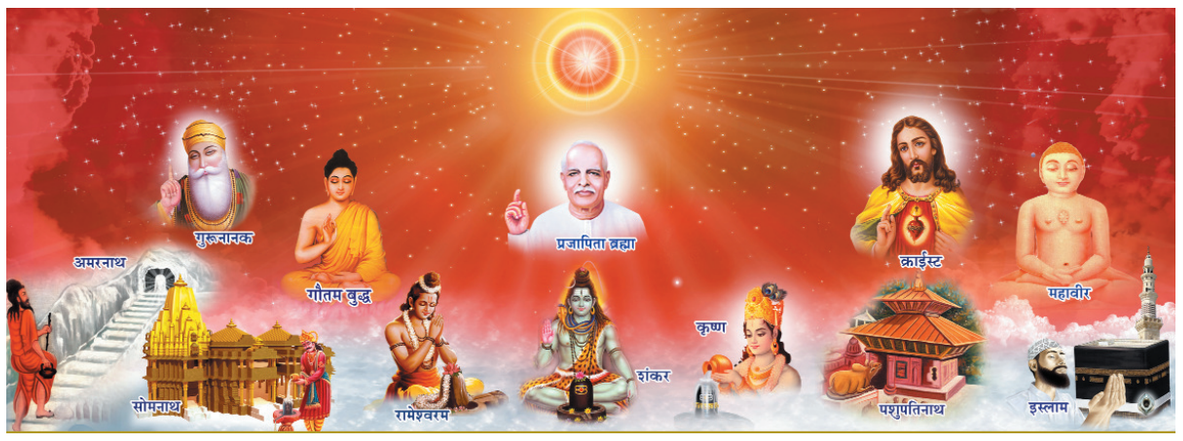

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

परमात्मा शिव की मान्यता सर्वमान्य है। भिन्न-भिन्न धर्मस्थापकों और देवताओं ने भी शिव की आराधना कर उत्तम पद की प्राप्ति की। दैवी विभूतियों की बात करें तो शिव को गोपेश्वर के नाम से जाना जाता है क्योंकि श्रीकृष्ण ने गायें पाली थीं और साथ-साथ शिव की पूजा भी करते थे। इससे शिव का नाम गोपेश्वर पड़ा। श्रीराम ने भी अधर्म रूपी रावण को जीतने के लिए सागर किनारे शिवलिंग बनाकर पूजा की और शिव का नाम रामेश्वर पड़ा।

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब भारत आये तो जलती हुई अग्नि का अंश लेकर आए। वह आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना करते हैं तो जलती हुई ज्योत का अंश स्थापन करते हैं जो परमज्योति का प्रतीक है। मिस्र में शिव की पूजा सेवा नाम से तथा फैजी देश में शिव को सेवा या सेवाजिया नाम से पूजते हैं।

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है। इटली में गिरजा घर में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरिजा का अर्थ पार्वती होता है। यहां गिरिजा से अर्थ आत्मा रूपी पार्वती है। सभी आत्मा रूपी पार्वतियों के मन में परमात्मा के प्रति प्रेम का प्रतीक है। यूनान में शिवलिंग को फल्लुस कहा जाता है। शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति भी स्थापित करते हैं जिसे धर्म का प्रतीक माना जाता है। यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलगोफी कहा जाता है।

धर्मस्थापकों ने की ज्योति की आराधना

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा गॉड इज लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो उन्हें परमज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसे देख हजरत मूसा ने कहा - जेहोवा। सिक्ख धर्म में भी गुरुनानक देव ने कहा कि एक ओंकार, निराकार, निर्वैर, अकालमूर्त। अर्थात् परमात्मा एक हैं, निराकार है उन्हें कभी काल नहीं खाता है।

जापान में लाल पत्थर पर लगाते हैं ध्यान

जापान में तीन फीट की ऊंचाई पर एक स्टैंड पर लाल पत्थर को रखकर ध्यान करते हैं, जो शिकोनिजम सेक्ट वाले हैं वो इस पत्थर को करनी का पत्थर कहते हैं। इसे चिंकोनसेंकी कहा जाता है जिसका अर्थ है शांति का दाता। अत: शांति के दाता तो परमात्मा शिव ही हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और फ्रांस के गिरजाघरों में और अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक के रूप में देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है पूरे विश्व में हर जगह शिव की पूजा, आराधना होती है।

इन्होंने भी की शिव की आराधना

युद्ध के पहले श्रीकृष्ण ने की पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

श्रीराम ने भी रामेश्वर में की शिव की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। शिव श्री राम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई। वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध मे विजयी नही हो सकते।

महादेव शंकर भी लगाते हैं शिव का ध्यान

हम महादेव शंकर जी को हमेशा ध्यान की अवस्था में बैठे देखते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव महादेव शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यानमुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमे शंकर बैठकर निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

अल्लाह को कहा वो नूर... वो तेजोमय

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अत: सभी ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता, सर्वशक्तिमान की शक्ति को स्वीकारा है।

बाबा की पहली नजर में ही निहाल हो गयी

जब पहली बार बाबा से मिलने का अवसर मिला तो बस मन से निकल पड़ा कि पाना था जो पा लिया। यही वह विधाता है जिसे मैं ढूढ़ रही थी। भौतिकवादी जीवन से एक धक से आध्यात्मिकता को अपना लिया। अपने जीवन पर परम संतोष है।

- **ब्रह्माकुमारी कमला ,** जोनल इंचार्ज, इंदौर-छत्तीसगढ़ जोन, रायपुर

बाबा का एक-एक कर्म प्रेरणादायी था

परमात्म मिलन की अनुभूति शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। परमात्मा स्वयं इस दुनिया का खेवनहार है। वह नयी दुनिया बना रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है। इससे ही हमने अपना जीवन अर्पण कर दिया। -

ब्रह्माकुमारी आरती, जोनल इंचार्ज, इंदौर

स्नेह भरी दृष्टि की आज भी अनुभूति होती है

1964 में कोटा हाउस में बाबा से मिलने का सौभाग्य मिला। उस समय बाबा की जो स्नेह भरी दृष्टि पड़ी उसकी अनुभूति आज भी होती रहती है। बाबा ने मुझे वरदान दिया आप जब भी चाहो तब बाबा की याद से शक्ति ले सकती हो।

- **ब्रह्माकुमारी रानी,** जोनल इंचार्ज, पटना-मुजफ्फरपुर जोन

खुश खबरी : आप भी मिल सकते हैं अपने परमपिता से, जीवन हो जाएगा मंगलमय, खिल जाएंगे मन के सुमन

लाखों लोगों ने अनुभव किया प्रभू का प्यार

जब कुछ भी इस सृष्टि पर घटित होता है तो कोई न कोई उसका साक्षी होता है, जो उसे लोगों तक पहुंचा सके। तभी वह घटना सत्य मानी जाती है। परमात्मा ने कहा है कि जब सृष्टि पर धर्म का नाश होगा, तब एक धर्म की स्थापना करने आऊंगा। परमात्मा ने गीता में स्पष्ट कहा है जब-जब इस सृष्टि पर धर्म की अति ग्लानि होगी, तब मैं इस सृष्टि पर आऊंगा। धर्म की अति ग्लानि आपके सामने है। ऐसे समय में परमात्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में धरा पर परमात्मा का अवतरण हो रहा है। इसे लाखों लोगों ने देखा और अनुभव किया है।

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

परमात्म अवतरण भूमि माउंट आबू, राजस्थान में प्रभू मिलन के सुख की गहन अनुभूति करते हजारों लोग।

दुनिया में तीन तरह के लोग हैं। पहले वो जो विज्ञान को मानते हैं, दूसरे वो जो शास्त्रों को मानते हैं और तीसरे वो जो केवल रूढ़ीवादी मान्यताओं पर ही चल रहे हैं। कोई भी यह नहीं सोच रहा हैं कि हमारी मंजिल क्या होगी?

आज अगर विज्ञान की बात करें तो विज्ञान के आविष्कार एटम बॉम्स आदि किसलिए बनाएं जा रहे हैं? कोई रखने के लिए तो नहीं ना। आज विज्ञान ही तो बता रहा है कि ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है। बढ़ता प्रदूषण अनेक विपत्तियों को निमंत्रण दे रहा है। ओजोन परत का क्षय होना नए-नए रोगों का कारण है। अनेक तरह की बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं, आज कितनी जगह पर विज्ञान के आविष्कार ही अभिशाप बनते जा रहे हैं। ये सब अंत का ही तो प्रतीक हैं।

दूसरी तरह के लोग जो शास्त्रों को मानने वाले हैं उनके लिए तो ये जानना और मानना बहुत ही सहज है क्योंकि शास्त्रों में वर्णित सब निशानियां जैसे रिश्तों की गिरती गरिमा, बढ़ती अशांति, आपसी मतभेद, अन्याय और भ्रष्टाचार आज स्पष्ट देखने में आ रहा है।

महाभारत में वर्णित गृहयुद्ध तो आज बिल्कुल स्पष्ट रूप में दिख रहा है। महाभारत के पात्र जैसे शकुनी आज हर गली के मोड़ पर मिल जाएंगे। धन का दुरुपयोग करने वाले, पुत्रमोह में अंधे मां-बाप, शास्त्रों का उपदेश मात्र देने वाले और अपने मन के वशीभूत पात्र, आज सब मौजूद हैं। ये सब निशानियां वही हैं जो परमात्मा ने अपने आगमन की बताई थीं।

जो लोग रूढ़ीवादी हैं उन्हें ये तो देखना चाहिए कि क्या हमारा इन सबसे कल्याण संभव है। क्या आज उन पुरानी मान्यताओं पर चला जा सकता हैं? जरूरत पड़ने पर हम अपने अनुसार उनमें स्वयं की मजबूरी का हवाला देकर हेर-फेर करते ही हैं। अत: ये सब बातें विचारणीय हैं। अत: आज समय बदलाव के कगार पर खड़ा है। आज सर्व सत्ताएं दम तोड़ रही हैं। इन सबका परिवर्तन केवल परमात्मा ही कर सकते हैं और वो इस धरा पर आ चुके हैं। आज दुनिया का हर वर्ग इसका साक्षी हैं।

छोटे से पौधे ने धारण किया वट वृक्ष का रूप

आत्मा- परमात्मा के मिलन का महाकुम्भ भारत के पश्चिमी छोर पर स्थित राजस्थान के माउंट आबू में जारी हैं। आज यहां भारत सहित पूरी दुनिया से हजारों की संख्या में लोग भाग लेते हैं और ईश्वरीय शक्ति से मिलन मनाते हैं।

परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता है। कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ , केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का छोटेस्तर से प्रारम्भ हुआ। संस्था की शुरुआत में मात्र 350 भाई-बहनें ही थे। तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी, जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। परमात्मा को भारत और वंदेमातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

आज भी आलोकित कर रही तपस्या की शक्ति

परमात्मा तो जानी जाननहार हैं इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को और शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं और बहनें तथा कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले। घर में रहकर ही तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही हैं।

140 देशों में फैला ईश्वरीय संदेश

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू आई। माउण्ट आबू से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में अध्यात्म और परमात्म के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। 80 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। ब्रह्माकुमारीज़ के पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब नौ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है। आज दुनियाभर से लोग परमात्म अवतरण में हिस्सा लेते है।

हर सांस में बाबा बसा है

मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहते हैं। हमारे हर सांस में बाबा बसा है। शिवबाबा ने हमें अपना बना लिया और अपनी सेवा का महान कार्य करा रहे हैं। ब्रह्मा बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल हमारी मां-बाप जैसी पालना की है। परमात्मा के साथ जीवन सफल हो गया। मनुष्यात्माएं सभी परमात्मा के बच्चे हैं। सभी को आकर परमात्मा से अपना वर्सा लेना चाहिए, क्योंकि समय तेजी से बीत रहा है।

- **राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी,** अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

इस यज्ञ में सफल हो गया जीवन

मैं तो बचपन से ही ब्रह्मा बाबा के अंग-संग पली बढ़ी, लेकिन जिस तरह से शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य शुरू किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। उसमें भी माताओं-बहनों को आगे रखकर जो एक नया मुकाम दिया, वह अपने आप में अनोखा और दिव्य था। जैसे-जैसे शिवबाबा को पहचानते गए जिंदगी में बदलाव और शक्ति बढ़ती गई। आज भी बाबा अवतरित होकर अपना कार्य करा रहे हैं। जल्दी ही नई दुनिया की स्थापना हो जाएगी। मुझे खुशी है सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया।

राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका

ये सत्य है परमात्मा आ चुके हैं

मेरे जीवन का सुनहरा पल था जब मैं दादी के माध्यम से शिव बाबा से सन्मुख मिला। ईश्वर से साकार में मिलना किसी अजूबे से कम नहीं था। जब बाबा सामने बैठे थे तब मन के सब संकल्प रूक गए थे। इस ईश्वरीय अनुभूति से तन और मन दोनों एक अलौकिक ऊर्जा से भर गए। मन इतनी गहरी शांति में उतर गया, जिस शांति के लिए आज बड़े-बड़े ऋषि तपस्या कर रहे हैं वह पलभर में ही स्वयं शांति सागर के सामने आने से महसूस होने लगी। ये महान सत्य है कि परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं।

मनोज आबूसरिया, उप निदेशक,(राजभाषा) सीबीआई, नईदिल्ली

हां, परमात्मा आए हैं धरा पर

परमात्मा कौन है, कैसा दिखाई देता है, कहां रहता है, उससे मिल सकता हूं या नहीं, क्या मैं उसके प्यार और शक्ति का अनुभव कर सकता हूं यह सवाल लगातार मेरे मन में था। 48 साल की उम्र में जब मैंने यह निश्चय कर लिया कि शायद अब इन सवालों का जवाब नहीं मिल सकता है, इसी दौरान ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के संपर्क में आने से मेरे सभी सवालों के जवाब मिल गए। यह सत्य है परमात्मा स्वयं धरती पर आते हैं और अपना परिचय देते हैं। यहां बताईं जा रही बातों को परमात्मा के सिवाए और कोई नहीं बता सकता है।

- **निजार जुमा,** अध्यक्ष, 51 अंतरराष्ट्रीय कंपनीज, केन्या

स्वयं परमात्मा का कारोबार चल रहा

जब से संस्था के संपर्क में आया हूं तो जीवन की दिशा ही बदल गई है। अब औद्योगिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव होते हुए भी मन सदा स्थिर रहता है। संस्था द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग गजब का मानसिक संतुलन प्रदान करता है। परमात्मा इस संस्था के माध्यम से गुप्त रूप में अपना कार्य कर रहे हैं। इतने बड़े कारोबार को परमात्मा के अलावा कोई नहीं संभाल सकता है। परमात्मा द्वारा दी जाने वाली यह अद्भुत शिक्षा एक नए समाज का निर्माण कर रही है।

सतबीर सोलंकी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति, दिल्ली

हर पल मदद करते हैं भगवान

मुझे बचपन से ही मेडिटेशन का शौक था। इस्लाम में होने की वजह से नमाज भी पढ़ता था, लेकिन मेरे अंदर कोई बदलाव नहीं आ रहा था। संस्था से जुड़ने के बाद जीवन में गुणों को उतारने की सहज विधि मिल गई। जो काम वर्षों में नहीं हो पाया, वो यहां आकर सहज हो गया। जब बाबा के महावाक्य सुने तो उन्होंने कहा बच्चे सदा खुश रहो। यह शब्द सुनते ही आत्मा अंदर से बोल उठी कि यही हैं वह जिसे ढूंढ रहे थे। स्वयं भगवान कदम-कदम पर मदद करते हैं। निश्चित ही बहुत जल्द ही धरती पर स्वर्ग आएगा।

इरशाद अहमद, शिक्षक, वाराणसी

परमात्मा की याद से दूर होती है बुराई

स्वयं को आत्मा समझ परमपिता को याद करने से आत्मा बनती है शक्तिशाली

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

यह अंधेरा कौन सा है? सूरज ढल गया और धरती पर अंधेरा छा गया तो ही अंधेरा होता है ऐसा आप मानते हैं? नहीं और एक अंधेरा है। उसको अज्ञान अंधेरा कहा जाता है। लौकिक दुनिया मे भी जिसने ज्ञान लिया है, उसको लौकिक पद ऊंचा मिलता है।

यहां बात है शिव से दिए हुए आत्मिक या पारलौकिक ज्ञान की। कारण यही ज्ञान आप को आत्मस्थित करके परमात्म शक्तियों की प्राप्ति कराएगा। खुशियों में झुमाएगा, मौलाई मस्ती मे उड़ाएगा। जन्म-जन्म आप जिस प्राप्ति के लिए शिवभक्ति कर रहे थे, वह प्राप्ति आप को यह ज्ञान पल-पल कराएगा। शिवरात्रि वर्ष में एक दिन सब लोग मनाते हैं, लेकिन शिव का ज्ञान ठीक तरह से न होने के कारण उस प्राप्ति से वंचित रहते हैं। जब तक हम स्वयं को शरीर समझते हैं, तब तक हमसे कोई न कोई विकर्म होता रहता है।

परमात्मा स्वयं बताते हैं आत्मा के घर का पता

परमात्मा आकर आत्मा सत्य है और शरीर विनाशी है इसका ज्ञान देते है, आत्मा के घर का पता बताते हैं, खुद का पता बताते हैं। शक्ति का स्त्रोत क्या है, आत्मा की शक्तियां कैसे जागृत होती हैं तथा कैसे उन्हें पाकर आत्मा सुख प्राप्त करती हैं।

यह अंधेरा सिर्फ 24 घंटे में एक बार आने वाली रात्रि का वाचक नही है। यहां रात्रि अज्ञान अंधकार का तमोगुण एवं आलस्य स्वरूप विस्मृति का और पापाचार का प्रतीक है। यहां रात्रि शब्द उस महारात्रि का वाचक है जब सारी सृष्टि में धर्मभ्रष्टता, कर्मभ्रष्टता और विकार प्रधान हो जाते है। ऐसा समय कलियुग का अंतिम चरण ही होता है। परमात्मा शिव ऐसे ही समय पर अवतरित होकर कल्याण की ओर सभी का ध्यान खिंचवाते हैं और विश्व के लिए कल्याणकारी का कार्य करते हैं।

ईश्वर से जोड़ने वाली यही एकमात्र संस्था है

पूरे विश्व में ईश्वर का साक्षात्कार कराने वाली एक ही संस्था है ब्रह्माकुमारीज़। ऐसी पूरे विश्व में कोई संस्था नहीं है जो ईश्वर से जोड़ने की सीधी विधि बता रही हो। माउंट आबू में आने पर संसार में रहने वाला प्रत्येक प्राणी ईश्वर के सम्मुख होता है और उसमें ऊर्जा का समावेश हो जाता है। विश्व परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। मैंने अनुभव किया है आज भी परमात्मा का अवतरण होता है।

- **रसिक पीठाधीश्वर महंत जन्मजेयशरण,** अध्यक्ष श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट बड़ा स्थान, अयोध्या

यह ज्ञान आज समाज के लिए बहुत जरूरी है

संस्था में आत्मा की पवित्रता एवं सरलता को सहजता से निर्माण किया जाता है। यहां दिए जा रहे आत्मा के ज्ञान को जीवन में धारण कर हम अपना स्वरूप भी परमात्मा जैसा बना सकते हैं। यहां स्पष्ट रूप से आत्मा के ज्ञान की व्याख्या की जाती है। आज समाज के लिए यह ज्ञान बहुत ही जरूरी है। यहां नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जा रही है।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, अध्यक्ष, विश्व कल्याण परिषद, दिल्ली

यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में हो रहा काम

सही मायनों में यह संस्था संस्कार परिवर्तन का कार्य कर रही है। यहां आने के बाद खुद का एहसास होने लगता है। यदि परमात्मा के सान्निध्य में मनुष्य चला जाए तो उसका जीवन निर्विघ्न, सहज और श्रेष्ठ बन जाता है। यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में काम हो रहा है। यहां दिया जा रहा ज्ञान प्रत्येक रीति से स्पष्ट है। आज इस ज्ञान की समाज को बेहद आवश्यकता है। इससे समाज में नैतिक मूल्यों का विकास होगा। समाज सुधार की दिशा में संस्था का कार्य सराहनीय है।

करुणाकरन भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि बिहार, ऑल इंडिया कमेटी

हर पल परमात्मा के अंग-संग का सौभाग्य मिला

परमात्मा के बारे में हमने सिर्फ सुना था कि वह इस रूप में आते हैं, ऐसे मिलते हैं। मुझे कभी यह विश्वास नहीं हुआ कि हम कभी परमात्मा से मिल पाएंगे। मैं उन भाग्यशाली लोगों में से हूं जिन्हें केवल परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है। सत्तर के दशक में मैं नौकरी छोड़कर परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन के इस महान कार्य में शामिल हो गया।

ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

अपना भाग्य बनाने का सुनहरा समय

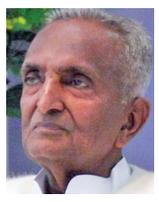

इस सृष्टि के रचनाकार स्वयं परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर आज से 80 वर्ष पूर्व अवतरण हो चुका है। वे गीता में किए अपने वायदे अनुसार प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। यह सृष्टि के महापरिवर्तन का समय चल रहा है। अपना भाग्य बनाने का यह सुनहरा अवसर है। ध्यान रहे कहीं हम वंचित न रह जाएं।

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, अतिरिक्त सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, मुम्बई

ब्रह्मा से हो रही है नई दुनिया की स्थापना

ब्रह्मा बाबा के साथ साकार में रहने का सौभाग्य मिला। मैंने अपने जीवन में ईश्वरीय शक्ति को महसूस किया है। परमात्मा आ चुके हैं, यह सत्य है। जिस तरह मेरे जीवन में एक अप्रत्याशित बदलाव आया वह किसी भी मनुष्य के लिए करना कठिन है। बिना परमात्मा के सान्निध्य के यह संभव नहीं है। यह कार्य कोई मनुष्य करा ही नहीं सकता। परमात्मा शिव अब प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं।

ब्रह्माकुमार बृजमोहन, प्रधान संपादक, प्यूरिटी मैगजीन, दिल्ली

परमात्मा अवतरित हो चुके हैं

परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा ने स्वयं अपने कार्य में मुझे सहयोगी बनाया। परमात्मा से मैं प्रतिदिन मिलन मनाती हूं। आप भी अपने परमपिता से एक बार जरूर मिलें। निश्चित ही आपका जीवन खुशियों से भर जाएगा।

ब्रह्माकुमारी आशा, निदेशिका, ओम् शांति रिट्रीट सेंटर, गुड़गांव, हरियाणा

शिव बाबा अपने बच्चों को ढूंढ रहे हैं

रूहानी प्यार आत्मा के सभी मूल्यों को जगा देता है। यह प्यार कभी भी मनुष्य के संग से नहीं पाया जा सकता है। शिव बाबा के साथ का अनुभव, स्पष्ट करना नामुमकिन है। सचमुच परमपिता परमात्मा इस दुनिया में अवतरित होकर अपने बच्चों को ढूढ़ रहे हैं और नई दुनिया बना रहे हैं।

ब्रह्माकुमार अमीरचंद, निदेशक, पंजाब जोन, चण्डीगढ़

हर सांस में दौड़ती है परमात्मा की याद

मैं तो यह सोचकर धन्य हो जाती हूं कि मेरा जीवन कितना श्रेष्ठ है। पता नहीं मेरे में क्या विशेषता थी स्वयं परमात्मा ने 16 वर्ष की आयु में ही अपने विश्व परिवर्तन के कार्य में लगा लिया। परमात्मा स्वयं मुझे संभालता है। मेरा अनुभव है यदि आप परमात्मा को अपना बना लो तो आपकी पालना वही करेगा। आज हर सांस में सिर्फ परमात्मा की सेवा और याद दौड़ती है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी , कार्यक्रम प्रबंधक, ब्रह्माकुमारीज़, आबू रोड, राजस्थान

बाबा ने मुझे बच्चा कहकर बुलाया

जब मैं आबू पहुंचा तो देखा इतना धनवान व्यक्ति जिसका कनेक्शन महारानी एलिजा बेथ से लेकर तमाम नामीग्रामी व्यक्तियों के साथ है। वह एक झोपड़ी में बैठकर साधु की तरह तपस्या कर रहा है। मैं यह देखकर स्तब्ध रह गया। जब उन्होंने मुझे बच्चा कहकर बुलाया तो मैंने हमेशा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया। आज भी ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है।

ब्रह्माकुमार करुणा, प्रबंध निदेशक, पीस ऑफ माइंड चैनल, आबू रोड

यहां आने से ही समस्याओं का समाधान होने लगा

जब मैं इस संस्था के संपर्क में आया और देखा कि यहां आने से ही समस्याओं का अपने आप समाधान होने लगा। परमात्मा की शिक्षा एवं उनके महावाक्य बिल्कुल सहज और असाधारण हैं। पवित्र बनने की शक्ति, सत्यता को परखने की शक्ति, संबंधों को निभाने की निपुणता, दिव्यता, मधुरता आदि की शक्ति स्वयं परमात्मा के सान्निध्य में आने से ही विकसित होने लगती है। उनकी एक दृष्टि जीवन बदल देती है। यह सौभाग्य की बात है उन्होंने अपना बनाया।

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

परमात्मा ने संवार दी पूरी जिन्दगी

यदि किसी के जीवन में सारथी और मार्गदर्शक परमात्मा बन जाये तो उससे बड़ा भाग्यवान कौन हो सकता है। परन्तु ऐसा ही मुझे भाग्य मिला। हमने अपना जीवन परमात्मा को सौंपा और परमात्मा ने पूरी जिन्दगी संवार दी। मेरे जीवन का हर संकल्प और श्वांस ईश्वरीय सेवा में गुजरा है।

- **ब्रह्माकुमार हरीलाल,** कार्यकारी निदेशक, गॉडलीवुड स्टूडियो, आबू रोड

ईश्वर के कार्य को समीप से देखा है

ईश्वर का कार्य कैसे होता है और परमात्मा कैसे आकर कार्य करता है। यह मैंने करीब से देखा है। मेरे जीवन में कई ऐसे बदलाव आए हैं जो परमात्मा के बिना हो ही नहीं सकता। जब हम बाबा के सम्मुख होते हैं और उनकी दृष्टि पड़ती है, तो स्वयं का अस्तित्व स्पष्ट महसूस होने लगता है।

ब्रह्माकुमारी सरला , जोनल इंचार्ज, गुजरात जोन, अहमदाबाद

शिव पर अक-धतूरा ही क्यों चढ़ाया जाता है?

देवी-देवताओं पर कमल, गुलाब और अन्य सुगंधित पुष्प चढ़ाते हैं, जबकि शिव पर अक, धतूरा व गंधहीन पुष्प चढ़ाया जाता है। वास्तव में अक और धतूरा विकारों और बुराईयों का प्रतीक है। मनुष्य इस सृष्टि पर पाप, अत्याचार, विकारों, बुराईयों और पांच विकारों की अति से दुःखी होकर जब परमात्मा को पुकारते है तो वे इस धरा पर अवतरित होकर मानवमात्र को दुःखों से छुड़ाते हैं। परमात्मा मनुष्य से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और बुराईयों का दान मांगते हैं। जो नर-नारी इन पांच विकारों को परमात्मा शिव पर चढ़ा देते हैं, वे निर्विकारी बन पावन, सतयुगी दैवी स्वराज्य के अधिकारी बनते हैं। इसी की स्मृति में परमात्मा पर अक, धतुरे का फूल चढ़ाया जाता है।

परमात्मा ज्योतिस्वरूप : स्वामी विवेकानंद

स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी शिव और काली की पूजा करते थे। स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिव स्त्रोत में शिव की वंदना इन शब्दों में की है - सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालन करने वाले हैं, जो अपरंपार महिमा वाले हैं। उन पारलौकिक परमात्मा को मेरे जीवन की श्रद्धा-ज्योति समर्पित है। परमात्मा शिव निराशा और अंधकार से सदा परे, ज्योतिस्वरूप हैं, उन्हें अखण्ड प्रभु-स्मृति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है और वे ही कलियुगी, विकारी सृष्टि के विकार मिटाने वाले प्रभु हैं। उन्हें मेरा प्रणाम है। वे ही मुझ आत्मा की मार्गप्रदर्शना और रक्षा करें।

'विश्व परिवर्तन' की 'अंतिम वेला'

परमात्मा ने गीता में कहा है- सर्व धर्मों का परित्याग कर केवल मुझ एक की शरण में आ जाओ तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा, तुम शोक मत करो, गीता में अपने वायदें अनुसार परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं

सीने जगत की अनुभूति

यहां का ज्ञान हर पल मदद करता है

ब्रह्माकुमारीज संस्था का ज्ञान और यहां की कार्यशैली हर पल मदद करती है। यहां ज्ञान और परमात्म मिलन की विधि सहज ही साक्षात् ईश्वरीय शक्ति की अनुभूति कराती है। मन हमेशा इसी अहसास में खोया रहना चाहता है। मुझे जब भी समय मिलता है मैं खुद को ईश्वर में लगाने का प्रयास करती हूं।

- **पूनम ढिल्लो,** फिल्म अभिनेत्री, मुंबई

... जो पाना था वो पा लिया

साकार में परमात्मा से मिलकर लगता है कि जो पाना है वो मैंने पा लिया है। मेडिटेशन से आत्मिक शांति मिलती है। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया उससे पता चला कि हम सभी इस सृष्टि रंगमंच पर अभिनयकर्त्ता हैं और हमें अपना अभिनय खुशी से करना है। मेरे साथ शिव बाबा की शुभकामनाएं हैं।

-**ग्रेसी सिंह,** फिल्म अभिनेत्री, मुम्बई

हां, यह सत्य है शिव आ चुके हैं

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़कर मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। यह सत्य है परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। वे सहज राजयोग की शिक्षा देकर हम आत्माओं को पावन बना रहे हैं। इस मिलन के साक्षी लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं, जिन्होंने साक्षात् भगवान से मिलन मनाया है।

सुरेश ओबेराय, फिल्म अभिनेता, मुंबई

प्रशासनिक हस्तियां

हर पल होता परमात्मा के साथ का अहसास

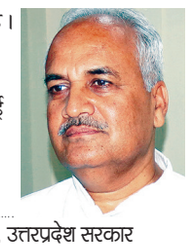

हर पल परमात्मा के साथ का एहसास होता है। कभी लगता ही नहीं कि परमात्मा हममे जुदा हैं। वे हर पल मेरी मदद के लिए तैयार रहते हैं। माउंट आबू में परमात्मा एक अलग ही नई दुनिया बना रहे हैं। ये किसी अजूबे से कम नहीं है। परमात्मा से मिलने का ब्रह्माकुमारीज संस्था ही सहज और सरल रास्ता है।

- **बृजमोहन मीणा,** पूर्व मुख्य सचिव, रसद विभाग, उत्तरप्रदेश सरकार

मैंने पहचाना, परमात्मा इस धरती पर आए हैं

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान के अनुसार यह संगमयुग है। यह तो वही धरती है जहां पर अर्जुन को श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया था। यह परम सत्य है कि वह श्रीकृष्ण की नहीं परमपिता परमात्मा की गीता थी। परमात्मा इस धरती पर आ चुके हैं, मैंने आज पहचाना हैं। मैं पुन: इस मिट्टी का, इस मिशन का धन्यवाद करती हूं।

- **सुमन मंजिरी,** आईजी, हरियाणा पुलिस

वो अव्यक्त आवाज आज भी रोमांचित कर देती है

इतना उच्च कोटि का ज्ञान सिर्फ स्वयं परमात्मा ही दे सकते हैं। परमात्मा पिता से मिलन की अनुभूति शब्दों में बयां नहीं की जा सकती है। यह सत्य है जिसे हम ढूंढ रहे हैं वो यहां आए हुए हैं। मेरा मनुष्य जीवन सफल हो गया। बाबा से मिलन की वो अव्यक्त आवाज अब भी याद आते ही अंदर से रोमांचित कर देती है।

- **देवव्रता दास,** सह सचिव, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली

ऊंचाइयों पर ले जाने वाला है यह ज्ञान

1992 में मैं संस्था संपर्क मे आया और मेरे मन में जो भी उलझनें थीं वो सब मिट गईं। वैज्ञानिक होने के नाते हर चीज पर विश्वास करना असम्भव होता है। परन्तु परमात्मा के सान्निध्य में आते ही सब कुछ स्पष्ट हो गया। परमात्मा से मिलना जीवन का सबसे अमूल्य क्षण है।

- **संजीव कुमार साहू,** वरिष्ठ वैज्ञानिक, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली

हाँ, हो रहा है आत्मा परमात्मा का मिलन

यह सुनने में अजीब लगता है कि परमात्मा और आत्मा का मिलन हो रहा है। परन्तु यह सच है। जो शास्त्रों में भगवान ने अपने आने के लक्षण बताये थे वह सब सामने है। यह वही समय है जब परमात्मा इस सृष्टि पर आत्माओं के मिलन कर रहे है। आने वाली दुनिया नई होगी जिसकी स्थापना हो रही है।

राकेश मेहता, वरिष्ठ आईएएस एवं अध्यक्ष, चुनाव आयोग, दिल्ली एवं चण्डीगढ, दिल्ली

स्वयं ईश्वर से आमने-सामने हुई मुलाकात

मैंने शास्त्र, ग्रंथ आदि बहुत पढ़े थे, लेकिन परमात्मा से मिलन नहीं हो पाया था। जब माउण्ट आबू में पहली बार शिव बाबा से आमने-सामने मिलन हुआ तो मेरे सब सवाल खत्म हो गए। वो गहन शांति की अनुभूति मेरे मन को मौन कर गई। आज जिस भगवान को बड़े-बड़े विद्वान, साधु तपस्या कर रहे हैं, वो गुप्त रूप में यहां अपना कार्य कर रहे हैं।

- **पुरुषोत्तम तिवारी,** पूर्व डीआईजी, भारतीय सीमा सुरक्षा बल, आबू रोड

सर्व धर्मान्परित्यज्य, मामे कंशरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

सार: सर्व धर्मों का परित्याग कर केवल मुझ एक की ही शरण में आ जाओ तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा, तुम शोक मत करो।

जिसका वर्णन गीता में है वह भगवान शिव का ही वर्णन है। आज प्रत्येक मनुष्य से कुछ ना कुछ कर्म विकर्म होते रहते है क्योंकि इस आसुरी दुनिया में रावण का साम्राज्य है। हर मनुष्यात्मा अपने विकर्मों की वजह इतना बोझिल हो चुकी है कि उसमें मानवीयता, अपने-पराये, भाई चारा का नामोनिशान नहीं है। चारो तरह हाहाकार, अत्याचार, पापाचार, आतंकवाद, अश्लीलता तथा प्राकृतिक आपदायें आदि सारी चीजे एक साथ अपने रौद्र रूप में प्रदर्शन कर रही है। आसुरी प्रवृत्ति धारण कर चुका मनुष्य तो एक-दूसरे के खून का इतना प्यासा हो गया कि उसे रिंचक मात्र भी अपने कर्मों पर अफसोस नहीं होता।

कहते है कि जब किसी चीज की आदि हो जाती है तो उसका अन्त भी स्वाभाविक है। यह वहीं समय है जब धर्म का विनाश हो चुका है। लोग अपने विकर्मों को समाप्त करने के लिए मंदिरों, मस्जिदों, साधूओं, सन्यासियों के साथ- साथ गंगा स्नान में दिन रात लगे हुए है। ऐसे समय में परमात्मा स्वयं इस सृष्टि पर आ चुके है और सर्व मनुष्यात्माओं को पापों से मुक्ति दिलाने और श्रेष्ठ भाग्य का अधिकारी बनाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दे रहे है। यह सत्य है। यही वह समय जब पूरा विश्व बदलाव के लिए तैयार है। समाज को चलाने वाली सभी सत्तायें हिल रही है। मूल्यों का पतन अपने न्यूनतम स्तर पर है। सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए पवित्रता की मर्यादा वाले रिश्ते भाई-बहन, बाप-बेटी जैसे सम्बन्ध में कलंकित हो रहे है। प्राकृतिक तांडव अपने विकराल रूप में पूरे संसार को समाहित करने के लिए तैयार है। ऐसे में परमात्मा के द्वारा दिये जा रहे राजयोग ध्यान और उनके सान्निध्य में हम जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं। अभी नहीं तो कभी नहीं।

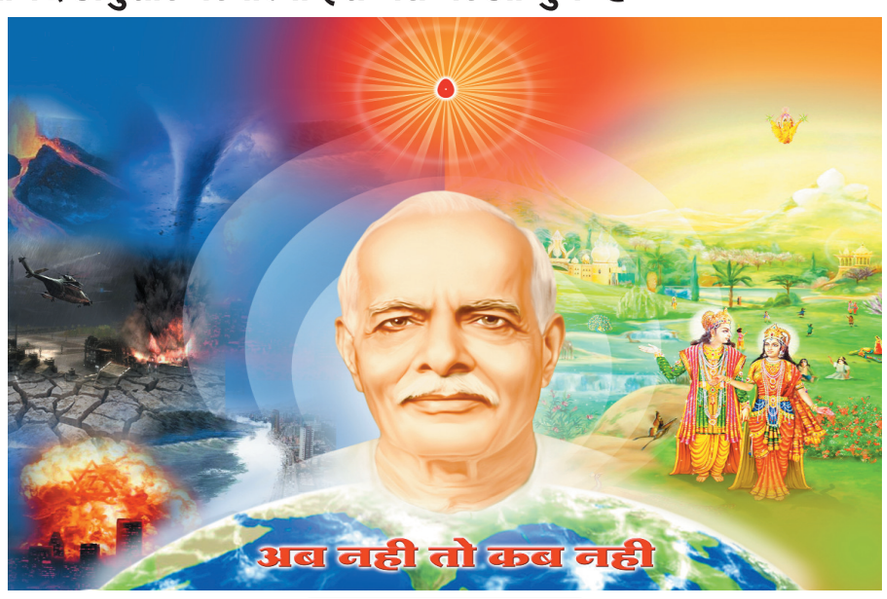

गीता के सिद्धांतों का उद्देश्य मनुष्य का आचरण महान बनाना

गीता में लिखे दार्शनिक सिद्धांतों के पीछे वास्तव में मनुष्य के आचरण को महान बनाने का लक्ष्य है। वे दार्शनिक तथ्य बौद्धिक विलास के लिए नहीं, बल्कि संस्कारों की शुद्धि, विचारों की सात्विकता और आचार की महानता के लिए हैं। दर्शनशास्त्र में किसी सिद्धांत के प्रतिपादन के लिए तर्क व युक्ति की शैली को अपनाया जाता है, जबकि गीता में मधुरता, स्नेह व कल्याण की भावना से सत्यों का बोध कराते हुए उनका संबंध आचरण से जोड़ा गया है।

स्वयं को परमज्योति को कर दें अर्पण

परमात्मा को न जानने के कारण आज के लोग अनेक मत-मतांतर के चक्कर में पड़े हैं। धर्मकलह, कर्मकलह में लगे है। दुर्गुण, दु:ख, दुविधा में जकड़े हुए हैं। हम अपने-अपने संकुचित देह के धर्मों को छोड़ प्रकाशरूप परमज्योति स्वरूप परमात्मा के प्रति अर्पित होंगे, तो सभी पापों से, सर्व जीवन बंधनों से, अशांति से मुक्त होंगे। जिसके लिए हमने जन्म- जन्मान्तर भक्ति की है, वही परमपिता, परमात्मा शिव आ चुके हैं। वह साधारण मानव के परिवर्तन के साथ विश्व का भी परिवर्तन करने का कार्य कर रहे हैं। वही हमारे आत्मा के पिता और सद्गुरु भी हैं।

मेडिटेशन: आत्मा का परमात्मा से मंगल मिलन का जरिया है 'राजयोग'

आप भी मना सकते हैं परमात्मा से मिलन

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

यह सत्य है कि आप भी परमपिता शिव परमात्मा से मंगल मिलन मना सकते हैं। इसके लिए न तो गाड़ी चाहिए और न घोड़ा है। बस जरूरत है तो नए परिवर्तन की ओर पहल करने की।

राजयोग मेडिटेशन वह माध्यम जिसके जरिए हम स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा से मन के तार द्वारा मिलन मना सकते हैं। यह विधि बहुत ही सरल और आसान है। इसके अलावा आपको इसे सीखने के लिए न रुपए खर्च करने की जरूरत है और न ही घर बार छोड़ने की। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेंद्र पर जाकर आप परमात्मा से मंगल मिलन मनाने की इस विधि को बिना कोई शुल्क दिए सीख सकते हैं।

यह सच है कि आप और हम देह नहीं एक आत्मा हैं। शरीर तो एक वस्त्र की तरह है जो हमें परमात्मा ने कर्म करने के लिए दिया है। जब आत्मा शरीर से निकल जाती है तो पांच तत्वों से बना यह शरीर इसी पृथ्वी लोक पर पांच तत्वों (जल, अग्नि, आकाश, जमीन और वायु) में समा जाता है। आत्मा और परमात्मा का स्वरूप एक जैसा ज्योतिर्बिन्दु है। परमात्मा ही आत्मा के वास्तविक पिता हैं।

खुद को कर दें शिव को अर्पण

हमने जन्म- जन्म शिव की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की है। अब उसके प्रत्यक्ष प्राप्ति का समय है। इस संसार को फिर से पावन और सुखी बनाने के लिए परमपिता शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ज्ञानामृत पिला रहे हैं और सहज राजयोग सिखा रहे हैं। उनकी आज्ञानुसार शिव अर्पण होकर हम ज्ञानसेवा करेंगे, तो उसका फल मुक्ति -जीवनमुक्ति के रूप में मिलेगा। इसे ही सच्चा पाशुपत व्रत कहते हैं। वास्तव मे शिवरात्रि केवल एक दिन नहीं होती बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान रात्रि में अपना कर्तव्य कर रहे हैं, यह सारा समय ही शिवरात्रि है। इस समय यदि मनुष्य आत्मा ईश्वरीय ज्ञान धारण कर और परमपिता से योग लगाकर जीवन का जागरण करती है तो फलस्वरूप उसे नई दुनिया में जाने का पारितोष मिलता है।

इस ज्ञान से लोगों के जीवन में बदलाव आया है

शिवबाबा नई दुनिया बना रहे इसमें कोई शक नहीं है। शिवबाबा जो ज्ञान दे रहें है, उससे लोगों के जीवन में जो बदलाव आ रहा है वह आश्चर्यजनक है। आज पूरे विश्व में हर प्रकार के और अनेक सोच वाले लोग इस अभियान का हिस्सा हैं। राजयोग के नियमित अभ्यास से आपका जीवन भी खुशियों से भर जाएगा।

- **ब्रह्माकुमारी शिवानी,** जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञ, गुडगांव

हर क्षेत्र की हस्तियों ने कहा : यहां चल रहा विश्व परिवर्तन का कार्य

नई दुनिया बनाने का उद्देश्य

यहां जो विद्या सिखाई जाती है वो समाज के लिए महत्वपूर्ण है। जब तक लोगों को यह मालूम नहीं होगा कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाना है, तब तक बुराइयों को नहीं रोका जा सकेगा। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य एक नया समाज और नई दुनिया बनाने का है, जिसमें यह जरूर सफल होगा।

- **अन्ना हजारे,** समाजसेवी, रालेगण सिद्धी, महाराष्ट्र

यहां ईश्वर ने स्वर्ग बसाया है

जिस स्वर्ग की कल्पना हम करते हैं वह परमात्मा ने यहां आबू की वादियों में बसाया है। यह सत्य ज्ञान मनुष्य को देवता बनाने वाला है। शिव बाबा के ज्ञान से मेरी जिंदगी से क्रोध, नफरत आदि बुराइयां स्वत: ही खत्म होती जा रही हैं। दुनिया को स्वर्ग बनते समय ही नहीं लगेगा।

- **राजेश राजोरे,** संपादक, देशोन्नति समाचार पत्र, बुलडाणा, महाराष्ट्र

भगवान का हाथ सदा मेरे सिर पर है

मैं बहुत भाग्यशाली हूं जो मुझे भगवान मिल गए। परमात्मा की याद से उनकी सर्वशक्तियां अपने अंदर प्रवेश करती हुई अनुभव करती हूं। उनका वरदानी हाथ मेरे सिर पर सदा ही अनुभव होता है। परमात्मा के साथ ने मुझमें सत्यता, निर्भयता और आत्मविश्वास भर दिया।

- **अनेटा लॉज,** को-ऑर्डिनेटर, शोध एवं विकास इंडिया वन सोलार थर्मल पॉवर प्लांट, पोलैंड

विश्व परिवर्तन असंभव नहीं

यही वह स्थान है जहाँ से परमात्मा पूरे विश्व को बदलने का कार्य कर रहा है। यहां आने से जीवन में नए मोड़ का अनुभव होता है। हृदय आध्यात्मिकता के रंग मे पूरी तरह से रंग जाता और तनाव से मुक्ति मिल जाती है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के संकल्प को साकार करना भले ही कठिन हो, लेकिन असंभव नही।

- **राजसदोष,** अध्यक्ष, लेखक परिषद, अबोहर, पंजाब

हां, मैंने परमात्मा को देखा है

मैंने अपनी आंखों से दादी के तन में अवतरित उस सर्वोच्च सत्ता का अनुभव किया है। उस समय मुझे वो चेहरा याद आने लगा जो मैंने बहुत पहले बचपन में साक्षात्कार किया था। तभी मेरे दिल से आवाज आई यही हैं परमात्मा। मैंने उसी समय ये प्रतिज्ञा कर ली कि मैं भगवान की ही होकर रहूंगी।

- **डॉ. उषा किरण,** विभागाध्यक्ष, हृदय रोग आयुर्विज्ञान विज्ञान संस्थान, दिल्ली

प्रभु प्रेमी बनो, सब मिल जाएगा

माऊण्ट आबू (मधुबन) में जो भी आता है, बदल जाता है। यह कार्य कोई इंसान का नहीं है। उठते ही हल्कापन लगता है। अलग उड़ान होती है। इसे शब्दों में नहीं बता सकते। इंद्रियां शांत हो जाती हैं। एक ही परिवार लगता है। जातपात के सब लेबल निकल जाते है। प्रभु प्रेमी बनो, सबकुछ मिल जाएगा।

- **शिराज रंगवाला,** टीवी आर्टिस्ट व रंगमंच कलाकार, अहमदाबाद

अपना पसंदीदा चैनल पीस ऑफ माइंड देखिए:
टाटा स्काई: 192 एअरटेल: 686 विडियोकॉन: 497 रिलायंस: 171 सम्पर्क करें: 8104777111

जानी- मानी हस्तियों के विचार

मूल्यनिष्ठ राजनीति के लिए राजयोग

परमात्मा के सब हैं, यही सत्य है

जब मैंने ध्यान शुरू किया तो बहुत ही अच्छी अनुभूति हुई। यह अनुभूति मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी बन गई। वह मेरे जीवन का सबसे शुभ दिन था। पूरा विश्व ही एक परिवार है। जनता की सेवा करने में यह शक्ति और अनुभव काम आएगा। परमात्मा के सब हैं, यही सत्य है। इसके अलावा और कोई अस्तित्व ही नहीं है। सभी लोगों को शिवबाबा का ज्ञान लेकर अपने जीवन को सुखी बनाना चाहिए।

- **शिवराज सिंह चौहान,** मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

माउंट आबू में मैं भगवान से मिला हूं

पहली दफा परमात्मा से मिलन मनाने का अनुभव दादी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से हुआ। ये मिलन अनोखा था। मैं भगवान से मिला, तब मुझे भगवान ने वरदान दिया। इस मिलन से आंतरिक सुख की अनुभूति हुई। मेरा मन अब भी बार-बार उस अनुभव में खो जाता है। मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि हम सब उस एक परमपिता की संतान हैं और वो इस धरा पर आ चुके हैं। सृष्टि परिवर्तन का यह कार्य कोई आम इंसान नहीं कर सकत है।

- **अरुण शर्मा,** पूर्व सांसद, आसाम

भगवान को देखा तकदीर बनाते

पहले मैं बहुत शराब व अन्य नशे का अति सेवन करता था। सन् 2001 में इस संस्थान के संपर्क में आने के बाद मुझे महसूस हुआ कि अब ईश्वर का सत्य ज्ञान और सान्निध्य मिल गया है। इस ज्ञान से मेरे सभी प्रश्नों का समाधान हो गया और मेरी वर्षों से भगवान को पाने की तलाश पूरी हो गई। आज मेरी जिंदगी सुखमय और आनंदमय बन गई है। यह सच है मैंने खुद भगवान को लोगों की तकदीर बनाते देखा है।

सौदागर गंगाराम, पूर्व विधायक, जिला निजामाबाद

न्यायाविद् विभूतियां

अपने पिता से मिलना सुखद अनुभूति

हां, मैं ईश्वर से साक्षात् मिला हूं। वह ईश्वर के साथ मेरे पिता है। अपने परमपिता परमात्मा से मिलना एक सुखद अनुभूति है। यह शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। इस पुरानी दुनिया को बदलने के लिए परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नयी दुनिया बना रहे है यह सच है। सभी मनुष्यात्माओं को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

- **एम वी रमेश,** रजिस्टार, सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट), दिल्ली।

मन से नित्य होता है परमात्मा से मिलन

रूहानी प्यार केवल भगवान से ही मिलता है। इसकी तुलना में हर संसारिक चीज छोटी लगती हैं। जब से शिव बाबा से साकार में मिलन हुआ है ये परिवर्तन इतना सहज हो रहा है जैसे रात के बाद सवेरा होता है। परमात्मा ने हमें हीरा बना दिया। राजयोग द्वारा मन से परमात्म मिलन नित्य होता है। न्यायिक प्रक्रिया के दौरान स्वयं भगवान की जो मदद मिलती है वो अकथनीय है।

- **कविता मिश्रा,** विशेष मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, आगरा, उत्तर प्रदेश

ध्यान लगाने से मन को मिलती है शांति

पवित्रता, सत्य का आचरण, भाईचारा, जीवन में शांति की वृत्ति को जागृत करना, मन को स्थिरता देने का प्रयास करना, यह बातें यहां बहुत अच्छी लगती हैं। यहां आकर ध्यान लगाने से मन को शांति का अनुभव होता है। समाज का विकास हो, सद्गुण हों, इसके लिए संस्था का जो प्रयास है वह सराहनीय है। परमात्मा का यह कार्य तेजी से बढ़ रहा है इससे पूरे विश्व में बदलाव होगा।

- **सर्वेश कुमार गुप्ता,** न्यायमूर्ति , उच्च न्यायालय, उत्तराखंड

यह ज्ञान एक परमात्मा ही दे सकते हैं

मैंने बचपन से बहुत भक्ति की, बड़े होकर गुरु बनाएं, लेकिन ईश्वर को जानने की इच्छा अधूरी ही रही। ब्रह्माकुमारी संस्था में जो ज्ञान मिला, उसमें मेरे सभी प्रश्नों का समाधान हो गया। यहां व्यक्ति के मानसिक विचार शक्ति को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया जाता है। इससे हम अपना जीवन जैसा चाहें, वैसा बना सकते हैं। यहां दिया जा रहा अद्भुत ज्ञान किसी इंसान का नहीं हो सकता। इसे सिर्फ एक परमपिता परमात्मा ही दे सकते हैं।

अभय कुमार वाजपेयी, विशेष सचिव, राष्ट्रीय एकीकरण, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संपर्क करें-

प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के लिए प्रकाशित एवं डीबी सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित। **सलाहकार संपादक:** प्रो. कमल दीक्षित
संपादक: ब्र.कु. कोमल, **संयुक्त संपादक:** ब्र.कु. पुष्पेन्द्र। RNI NO. - RJHIN/2013/53539, Postal Regd. - RJ/SRO/9662/2015-2017
Posting on 18 & 20 of Every Month only at shantivan Sub-Post Office, Abu Road, Raj - 307510

पत्र व्यवहार का पता
संपादक: ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस शांतिवन, तलहटी, आबू रोड- 307510, जिला-सिरोही,
मो. 9413384884, 8769830661 ईमेल: bkkomal@gmail.com